International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 14 Issue 3 || March 2025 || PP. 08-11

मिथिला की लोक चित्रकला का ऐतिहासिक अध्ययन

शोधार्थीभावना कुमारी
(इतिहास विभाग),बी.एन.एम.यू., मधेपुरा, बिहार

प्रभाकर कुमार
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,इतिहास विभाग,
भू. ना. मं. वा. महाविद्यालय,साहुगढ़, मधेपुरा

सार

मिथिला लोक चित्रकला पारंपरिक रूप से भारतीय उपमहाद्वीप के मिथिला क्षेत्र में अलग-अलग समूह की महिलाओं द्वारा बनाई गई थी। मधुबनी कला मिथिला अर्थात् बिहार में लोकप्रिय एक लोक चित्रकला है। इस लोक चित्रकला में महिलाओं की अत्याधिक भूमिका होती है। इसलिए इसे महिलाओं की चित्र शैली भी कहते हैं। इसका उदय बिहार के मिथिला क्षेत्र के मधुबनी जिले से हुई। जो भारतीय उपमहाद्वीप के मिथिला क्षेत्र में लोकप्रिय है। मिथिला लोक चित्रकला भारतीय चित्रकला की एक शौली है। यह पेंटिंग अलग-अलग प्रकार के औजारों से की जाती है। जिसमें उंगलियों, टहनियों, ब्रश, नि पेन और माचिस की तीली और प्राकृतिक रंगों का प्रयोग किया जाता है। मिथिला लोक चित्रकला के अंतर्गृहीत दो प्रकार के चित्र बनाए जाते हैं। पहला भित्ती चित्र दीवारों पर बनाए जाते थे और यह इसकी शुरूआती दौर था। वर्तमान में मधुबनी चित्रकला इतनी लोकप्रिय हो गई है क्योंकि यह भित्ती शैली से कागज, कपड़े तथा कैनवास पर चित्रित की जाने लगी है। मिथिला लोक चित्रकला की पाँच विशेष शैलियाँ हैः भरनी, तांत्रिक, गोडना और कोहबर। इस लोक चित्रकला के दूसरे रूप अरिपन चित्र है। मिथिला लोक चित्रकला की ख्याति प्राप्त महिला चित्रकार हैं- सीता देवी, गोदावरी दत्त भारती दयाल, बुला देवी आदि। मिथिला लोक चित्रकला प्राचीन महाकाव्यों के लोगों और स्वाभाविक, दर्शनीय और देवताओं के साथ उनके संयोजन को दिखाती हैं। मिथिला लोक चित्रकला में राजसी दीवान के दर्शनीय औऱ शादी जैसे सामाजिक प्रयोजनों के साथ-साथ सूर्य, चंद्र और तुलसी जैसे धार्मिक पौधों को भी उचित रूप से चित्रित किया जाता है। इस शोध पत्र का उद्देश्य मिथिला लोक चित्रकला के सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक के प्रभाव पर प्रकाश डालना है और इसके योगदान का वर्णन करना है।

मुख्य बिन्दुः-
सामाजिक, धार्मिक, संस्कृति, राजनीतिक, आर्थिक।

Date of Submission: 05-03-2025 Date of acceptance: 16-03-2025

परिचय

बिहार की लोक चित्रकला की वैभवशाली परंपरा में मिथिला की रंगीन चित्रकारी को अंतरराष्ट्रीय ख्याति मिली है। प्राचीनकाल से चली आ रही चित्रकारी की इस परंपरा ने समय-समय पर सुविचारितों का ध्यान आकर्षित किया है। ख्याति प्राप्त चित्रकार उपेन्द्र महारथी मिथिला चित्रकारी से इतने प्रभावित हुए थे कि सम्पूर्ण बिहार की लोक चित्रकारी पर शोध औऱ अध्ययन करने में वर्षों का समय लगाया था। मिथिला चित्रकला की विशेषताओं को उन्होंने चित्रकला के विशेषज्ञों के सामने संपूर्ण श्रेष्ठता को प्रकाशित किया था।

लोक संस्कृति में पढ़े लिखे समृद्ध पुरूष वर्ग की आकांक्षा महिला समाज तथा विद्वत्ता – निपुणता से दूर आम जनता का श्रेष्ठता अधिक हुआ करता है। मिथिला की चित्रकला में भी महिला समूह की वरीयता अवश्यम्भावी रही है लेकिन शिक्षित कला विशेषज्ञ लोगों के प्रभाव ने ख्याति देने के साथ ही उसमें कई सजावट भी उत्पन्न किये हैं। पहले जमीन, भित्ती और कपड़े तक सिमटी इस चित्रकारी को कागज तथा कैनवास पर भी अंकन मिलने लगा है। पहले उसमें कलाकारों के परिवार में निर्माण किये हुए प्राकृतिक रंगों के ही प्रयोग होते थे लेकिन अब उसमें कृत्रिम रंगों का प्रयोग भी हो रहा हैं।

मिथिलांचल की इस लोक चित्रकला का मधुबनी चित्र या मधुबनी पेंटिंग के नाम से ख्याति मिली है। इस चित्र के रंग, विषय, शैली और चित्रकार समूह में विभिन्नता रही है। कुलीन समाज से अलग कुछ दलित जाति के परिवारों में इसके एक स्वतंत्र स्वरूप का विकास हुआ है। उनकी भी अपनी परंपरा रही है। ब्राह्मणों तथा कायस्थ परिवारों में विकसित शैलियों में रंग और चित्रकारी की सूक्ष्म भिन्नताएँ देखी जाती हैं। संपूर्णता में देखा जाय तो मिथिला चित्रकला में तीन प्रमुख रूप दिखाई देते हैं भूमि आकल्पन, भित्ती चित्रण, पट चित्रण। अर्थात् जमीन पर अल्पना बनाना, दीवार पर की गयी चित्रकारी (कोहबर आदि) और कपड़े पर चित्रकारी।

भूमि आकल्पन की परंपरा अक्सर हर संस्कृति में रही है। महाराष्ट्र की रंगोली, गुजरात की साँथिया उत्तर प्रदेश के व्रज क्षेत्र की साँझी, पहाड़ी क्षेत्र की आँजी, राजस्थान की माँडना, दक्षिणी प्रदेशों का ओलम, असम की अल्पन आदि भूमि आकल्पना के ही भिन्न-भिन्नरूप हैं। बिहार में इसे चौका पूरना कहा जाता है, जो पूजा-पाठ के समय कलश स्थापना का स्थान आवश्यक होता है। इसे मिथिला में आश्विन या अरिपन कहा जाता है। यह अरिपन मिथिला में अन्य पूजा, उत्सव या अनुष्ठान अथवा विवाह जैसे मांगलिक अवसर पर भूमि चित्र बनाये जाते हैं। विवाह के समय के अरिपन मे कमल, मछली, पुरइन (कमल का पत्ता), बाँस आदि के चित्र बनाए जाते हैं।

भूमि आकल्पन आर्थात् भूमि पर किये जाने वाले चित्रकारी की आकांक्षा भित्ति चित्र आर्थात् दीवार पर बनाए जाने वाले चित्रों में अधिक कलात्मकता देखी जाती है। उसकी भावों से परिचालित होने की प्रवृति तथा कल्पना की असाधारण शक्ति अधिक प्रभाव उत्पन्न करती है। उसमें स्थायित्व भी अधिक होता है। मिथिलांचन के भित्तिचित्रों में सबसे अधिक कलात्मक क्षमता दिखाई पड़ती है।

मिथिलांचल में कोहबर चित्रों में तीन भाग होते हैं- गोसाई घर (कुलदेवा का स्थान), कोहबर घर (जहाँ नव दंपती का स्थान रहता है) और कोहबर घर का कोनिया (कोहबर का बाहरी भाग)। तीन जगहों पर चित्रकारी के रूप भिन्न-भिन्न होते हैं।

कोहबर चित्रकारी आयताकार या वर्गाकार होता है। उसमें तोता, बाँस, कमल का पत्ता, कछुआ और मछली के अलावा नैना जोगिन और सामा चकेवा के चित्रकारी की भी परंपरा है। वैवाहिक अवसर पर ही कोहबर का अंकन होता है और इसे महिला ही करती है। कोहबर की चित्रकारी में अनार की डंडी की कलम तथा रूई से बनी तूलिका (ब्रश) का प्रयोग किया जाता है। मिथिला के भित्तिचित्रों मे राधाकृष्ण की रासलीला, राम सीता विवाह, जट जटिन आदि पौराणिक और लोक कथाओं के भी चित्रकारी होते हैं।

पट चित्रण की परंपरा ने मिथिला की रंगीन चित्रकला को उत्थान तथा ख्याति प्राप्त कराया है। विद्यापति के समकालीन राजा शिवसिंह के समय ने पट चित्रण कला को विशिष्ट प्रगति दिलायी। अलग-अलग विषय के दृश्य कपड़े पर अंकित करने की उस परंपरा की ही प्रगति आज कागज या कैनवासों पर दिखाई पड़ती है।

मिथिलांचल की इस प्रसिद्ध चित्रकला में रेखा तथा रंग के कई कलात्मक प्रयोग देखे जाते हैं। चित्र के किनारों (बॉर्डर) से घिरा होना इनमें आवश्यक होता है। किनारी आर्थात सीमा रेखा के अंदर चित्रित दृश्य या विषयों में आवश्यक होता है कि रेखा और रंग से कोई जगह खाली नहीं बचे। खाली जगहों को भरने में प्रकृति और पशु-पक्षियों के चित्र सहायक होते हैं।

मिथिला चित्रकला में जितवारपुर की सीता देवी. जगदम्बा देवी, ऊषा देवी, यमुना देवी और राठी की महासुन्दरी देवी को विशेष प्रसिद्ध मिली है। जगदंबा देवी को 1970 ई0 मे राष्ट्रीय हस्तशिल्प पुरस्कार से सम्मानित किया गया। सीता देवी (1975), रसीदपुर की गंगा देवी (1976), राँटी की गोदावरी दत्ता (1980), महासुंदरी देवी और लहरियांगंज की शांति देवी को भी उनकी चित्रकारी के लिए राष्ट्रीय हस्तशिल्प पुरस्कार मिल चुके हैं। 1986 ई0 में शिवन पासवान को भी इस पुरस्कार से सम्मानित किया गया। जगदंबा देवी, सीता देवी तथा गंगा देवी को क्रमशः सन् 1975, 1978 और 1984 में भारत सरकार ने पद्मश्री से भी अलंकृत किया था।

मिथिला में पुरूष और महिलाएँ बहुत धार्मिक होते हैं, इसकी वेशभूषा मिथिला की समृद्ध पारंपरिक संस्कृति से उत्पन्न हुई है। मिथिला चित्रकला के साथ पंजाबी कुर्ता और धोती, मैरून रंग का गमछा पुरूषों के लिए सामान्य वस्त्र हैं। पुरूष अपनी नाक में, सोने की अंगूठी पहनते हैं जो भगवान विष्णु से प्रेरित समृद्ध, खुशी औऱ धन का प्रतीक है। साथ ही अपनी कलाई पर बल्ला और सिर पर मिथिला पाग पहनते हैं। प्राचीन काल में मिथिला में रंग का कोई विकल्प नहीं था, इसलिए मैथिल महिलाएँ लाल बॉर्डर वाली सफेद या पीली साड़ी पहनती थी, लेकिन अब उनके पास कई विवध प्रकार के रंग के विकल्प हैं, और वे कुछ खास अवसरों पर लाल बोर्डर वाली साफेद या पीली साड़ी पहनती है। लाल रंग हिंदू देवी दुर्गा का भी प्रतिनिधित्व करता है, जो नई शुरूआत और स्त्री शक्ति का प्रतीक है। छठ के समय, मिथिला की महिलाएँ बिना सिलाई के शुद्ध सूती धोती पहनती है जो मिथिला की शुद्ध, पारंपरिक संस्कृति को दिखाती है।

झिझिया और धुनो नाच मिथिला का सांस्कृतिक नृत्य है। झिझिया का प्रदर्शन दरभंगा, मुजफ्फरपुर, मधुबनी और उनके पड़ोसी जिलों में किया जाता है, दूसरी ओर धुनो नाच का प्रदर्शन बेगूसराय, खगड़िया कटिहार, नौगछिया में दुर्गा पूजा औऱ काली पूजा के समय शंख ढाक ध्वनि के साथ किया जाता है। मिथिला में पूरे वर्ष में कई त्यौहार मनाये जाते हैं। छठ, दुर्गा पूजा और काली पूजा को मिथिला के सभी त्योहारों में सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। मिथिला पाग भारत और नेपाल के मिथिला क्षेत्र में मैथिल लोगों द्वारा पहना जाने वाला सिर का कपड़ा है। यह सम्मान और आदर का प्रतीक है और मैथिल संस्कृति का एक महत्वपूर्ण भाग है।

पाग का इतिहास प्रगौतिहासिक काल से है जब इसे पौधों के पत्तों से बनाया जाता था। आज यह संशोधित रूप में मौजूद है। पाग को सभी मैथिल वर्ग पहनते हैं। पाग का रंग भी महत्वपूर्ण है, लाल पाग दुल्हें और जनेऊ संस्कार के समय, सरोसों के रंग का पाग शादी में सम्मिलित होने वाले लोग और बुजुर्ग सफेद पाग पहनते हैं।

इस पाग को अब लोकप्रिय मैकमिलन डिक्शनरी में स्थान मिलगई है, मैकमिलन डिक्शनरी पाग को "भारत के मिथिला क्षेत्र में लोगों द्वारा पहना जाने वाला सिर का कपड़ा" के रूप में दर्शाती है।

10 फरवरी 2017 को भारतीय डाक विभाग ने "भारत के टोपों" पर सोलह स्मारक डाक टिकटों को लागू किया। इनमें से एक डाक टिकट पर मिथिला पाग को भी दिखाया गया है। मिथिला लोक फाउंडेशन (2017) एक सामाजिक सेवा संगठन था जिसका प्रमुख कार्यक्रम पाग बचाओ अभियान था।

मिथिला के लोग मुख्य रूप से मैथिली और इसकी विभिन्न बोलियों में बात करते हैं जिनमें थेथी, कथित बोलियाँ बज्जिका और अंगिका शामिल हैं, जबकि आधिकारिक या प्रशासनिक उद्देश्यों के लिए अंग्रेजी, हिंदी और नेपाली जैसी कई भाषाओं में भी निपुण हैं।

यह भाषा भारतीय उपमहाद्वीप की मूल निवासी एक इंडो आर्यन भाषा है, जो मुख्य रूप से भारत और नेपाल में बोली जाती है और 22 मान्यता प्राप्त भारतीय भाषाओं में से एक है। नेपाल में, यह पूर्वी तराई में बोली जाती है और नेपाल की दुसरी सबसे लोकप्रिय भाषा है। तिरहुत पहले लिखित मैथिली की प्राथमिक लिपि थी, साधारणतः इसे कैथी के स्थानीय संस्करण में भी लिखा जाता था। अब इसे देवनागरी लिपि में लिखा जाता है।

मैथिल व्यजन भारतीय व्यंजन और नेपाली व्यंजन का एक हिस्सा है। यह एक पाक शैली है जिसकी उत्पत्ति मिथिला में हुई है। कुपारंपरिक मैथिल व्यंजन हैः दही – चूरा, अरंकंचन की सब्जी, घुघनी, पारंपरिक अचार, तिलकोर का तरूआ, बहा, बड़ा, दही, माछ, मटन, इरहार, पुडुकिया, माखन, अनारसा, बगिया आदि।

मुख्य त्यौहाः- छठ पूजा, सामा – चकेवा, अगहनिया छैथ, बैसाख छैथ, चौरचन, जितिया, विवाह पंचमी, सीता नवमी, गंगा दशहरा, कल्पवास कोजागिरी (लक्ष्मी पूजा) पाटा पूजा, खुट्टी पूजा, मोहालय, दुर्गा पूजा, काली पूजा, सरस्वती पूजा, राम नवमी, बसंती पूजा (चैती दुर्गा पूजा), तिलसकराईत, आखर बोछोर, नाग पंचमी, बरसात, विश्वकर्मा पूजा, होली आदि त्यौहार मनाये जाते हैं।

साहित्य का राजनीतिक इतिहासः दिव्यापति और पंद्रहवीं शताब्दी, पंकज झा द्वारा रचित, नई दिल्ली

15 वीं शताब्दी के कवि और राजदरबारी विद्यापति उत्तर बिहार में जाने जाते हैं। उन्हें उचित रूप से एक साहित्यिक अग्रणी के रूप में याद किया जाता है, जिन्होंने न केवल कई भाषाओं में रचना की, बल्किकई तरह की विधाओं पर उनका अतुलनीय अधिकार था। कश्मीरी संत कवि नुंद ऋषि (1378-1440) के समकालीन विद्यापति की अधिकांस रचनाएँ 1400 और 1440 ई0 के मध्य की समय हैं। बिहार में उनकी स्थायी लोकप्रियता उनके द्वारा अपनी मूल मैथिली में रचे गए गीतों के कारण अधिक है। ये गीत मिथिला के प्रतिदिन के जीवन का संग्रह है और एक क्षेत्र के रूप में बिहार की सांस्कृतिक और राजनीतिक कल्पनाओं में उलझ गये हैं। 16वीं सदी में मुगल इतिहासकार अबुल फजल के अकबर नाम में विद्यापति का उल्लेख मिलता है, तो वे 20 वीं सदी में बंगाली कवि रवींद्रनाथ टैगोर के लिए भी प्रेरणा का उदाहरण बन गए। पंकज झा न केवल हमें विद्यापति की प्रतिभा के करीब लाते हैं बल्कि 16वीं शताब्दी में मुगल राजनीतिक और साहित्यिक संस्कृति के अंतिम उदय को आकार देने वाली प्रक्रियाओं में ऐतिहासिक अंतरदृष्टि प्रदान करते हैं। और भी तेज हो गई।

ताराकांत झा और दुसरे मैथिल एक्टिविस्ट ने इन माँगों को लेकर आंदोलन तेज कर दिए। अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार ने 2002 मे मैथिली को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल कर लिया। तब से इन एक्टिविस्ट को सिंगल पॉइंट एजेंडा है एक नए मिथिलांचल राज्य को बनाना खास कर तेलंगाना राज्य बनने के बाद से मिथिला क्षेत्र में ऐसे संगठन विस्फोटक ढ़ंग से बनने लगे हैं,

मिथिला की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि और छोटे कुटीर उद्योगों पर निर्भर है, लेकिन राज्य के अन्य भागों की तुलना में यह क्षेत्र आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ है।

राज्य GDP में योगदानः बिहार की GDP में कृषि का 24% योगदान है, और इसमें से मिथिला का 60% भाग है। इसके बावजूद, मिथिला को सिंचाई और कृषि संबंधी सुधारों में नियत सहायता नहीं मिलती।

बिहार सरकार की रिपोर्ट, हर वर्ष मिथिला में बाढ़ से 2,000 करोड़ रूपये तक की फसल बर्बाद होती है। बाढ़ प्रभावित जिलों जैसे दरभंगा, मधुबनी और सुपौल में उपयुक्त राहत नहीं मिलने से कृषि पर गंभीर प्रभाव पड़ता है।

सिंचाई और उपजः मिथिला में कुल खेती योग्य भूमि का केवल 28% सिंचाई के अधिकार में है, जबकि दक्षिण बिहार में यह आंकड़ा 48% है। इसे स्पष्ट है कि किसानों को कृषि उत्पादन में कठिनाइयाँ होती हैं।

मधुबनी पेंटिंग का उद्योगः मधुबनी लोक चित्रकला के लिए राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजार होने के बावजूद, इस उद्योग का वार्षिक योगदान मात्र 200 करोड़ रूपये तक सीमित है, जो सरकारी भारत के दार्शनिक, उद्भव सांस्कृतिक और साहित्यिक विकास के क्षेत्र में मिथिला का स्थान महत्वपूर्ण रहा है।

मिथिला लोक चित्रकला को आगे बढ़ाने में राजनीतिक विचारों का भी महत्वपूर्ण योगदान है। आजादी से पहले 1912 ई0 में जब बिहार बंगाल प्रोविंस से निलककर एक अलग राज्य बना, उसी समय से एक अलग मिथिला राज्य की मांग शुरू हो गई थी, तब से बिहार राज्य 1936 ई0 में ओडिशा और 2000 में झारखंड से अलग राज्य बन गई वहीं दूसरी ओर अलग मिथिला राज्य की माँग चलती रही, मिथिला राज्य के एक्टिविस्ट दो मांगों को लेकर प्रोटेस्ट करते रहे। पहली माँग थी, मिथिलांचल के नाम से एक अलग मिथिला राज्य बनाना और दूसरी मांग मैथिली भाषा को भारत सरकार को आठवीं अनुसूची में शामिल करना। झारखंड के अलग राज्य बनने के बाद से ये माँगे संरक्षण के लिए विशेष योजनाओं की आवश्यकता है।

मिथिला की चित्रकला में आधुनिक रासायनिक रंगों के प्रयोग होने लगने के अलावा अन्य कोई विशेष बदलाव नहीं हुआ है। उसमें कलाकार के परिवेश तथा उसकी व्यक्तिगत रूचि के अनुकूल विभिन्न प्रयोगों की संभावनाएँ बनी ही है। रेखा प्रधान चित्र होने के कारण इस चित्रकला में रेखा या रंग की अस्पष्टता कहीं दिखाई नहीं पड़ती। विषय या व्यक्ति के भाव की व्यंजना करा देने की प्रमुखता के बावजूद चित्र में खाली स्थानों को भरने या सजावट करने में कलाकार की रूचि तथा श्रम के प्रचुर प्रमाण मिलते हैं।

शोद्ध पद्धति

यह शोध पत्र द्वितीयक स्रोत पर आधारित है, जिसमें वर्णनात्मक अध्ययन को शामिल किया गया है द्वितीयक स्रोत के अन्तर्गत जर्नल, पत्रिका, किताबों को शामिल किया गया है।

निष्कर्ष

मिथिला क्षेत्र के विकास, सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक प्रगति के लिए इसे एक अलग राज्य का दर्जा देना काफी महत्वपूर्ण है। मिथिला के लिए कृषि, कुटीर उद्योग, बाढ़ प्रबंधन, बुनियादी ढाँचा, और सास्कृतिक संरक्षण के लिए विशेष योजनाओं की आवश्यकता है।

मिथिला की चित्रकला में आधुनिक रासायनिक रंग के प्रयोग होने लगने के अलावा अन्य कोई विशेष बदलाव नहीं हुआ है। उसमें कलाकार के परिवेश तथा उसकी व्यक्तिगत रूचि के अनुकूल विभिन्न प्रयोगों की संभावनाएँ बनी हुई हैं। रेखा प्रधान चित्र होने के कारण इस चित्रकला में रेखा या रंग की अस्पष्टता कहीं दिखाई नहीं पड़ती। विषय या व्यक्ति के भाव की व्यंजना करा देने की प्रमुखता के बावजूद चित्र में खाली स्थानों को भरने या सजावट करने में कलाकार की रूचि तथा श्रम के प्रचुर प्रमाण मिलते हैं।

संदर्भ

- झा, जय शंकर. (1979). एजुकेशन इन बिहार केपी जयसवाल रिसर्च इंस्टीट्यू, पटना.
- ठाकुर, उपेन्द्र. (1956). हिस्ट्री ऑफ मिथिला, दरभंगा,
- झा, जीवन. (1964). पूर्व मीमांसा इन सोर्सेज, लाइब्रेरी ऑफ इंडियन फिलॉसफी एंड रिलिजन, बनारस हिंदू यूनवर्सिटी.
- गीता प्रेस गोरखपुर (1995). बाल्मीकीय रामायण, द्वितीय संसकरण
- शर्मा, डॉ. रामप्रकाश. (2016). मिथिला का इतिहास, संस्कृति वि0 वि0 दरभंगा.
- शारदीय, कर्णामृ.(1997). मैथिल गाथा सभाक
- झा, पंकज कुमार. (2010). सुशासन के आईने में नया बिहार, प्रभात प्रकाशन, पटना.
- झा, पंकज. (2018). साहित्य का राजनीतिक इतिहासः विद्यापति और पंद्रहवीं शताब्दी, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली.